पं० दीनदयाल उपाध्याय जी का शैक्षिक चिन्तन

कमलेश सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी

सारांश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर 1916 राजस्थान प्रान्त के जयपुर–अजमेर रेलवे लाइन पर स्थित धनकिया नामक रेलवे स्टेशन में हुआ था। पंडित जी जब 2 वर्ष 6 माह के थे तभी उनके पिता भगवती प्रसाद का स्वर्गवास हो गया। 6 वर्ष के होते–होते मी श्रीमती रामप्यारी क्षयरोग से ग्रस्त होकर भगवान को प्यारी हो गयी। अल्पायु में ही पंडित जी से माँ का साया जाता रहा। पंडित जी की औपचरिक शिक्षा–दीक्षा अपने मामा राधारमण जी शुक्ल के साथ गंगापुर सिटी में हुई। वह बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक उनके द्वारा रचित विभिन्न ग्रन्थों व उनके कृतित्व से मिलतो है। समाज के लिए शिक्षा की महत्ता कितनी है, उनके द्वारा स्थापित ष्जीरो क्लबष से लगाई जा सकती है। जीरा क्लब का उददेश्य परीक्षा में शून्य अंक लाने व कमजोर व पिछडें छात्रों की सहायता कर उन्हें बराबरी के स्तर पर लाना था। पंडित जी शिक्षा को समाज के विकास का सर्वोत्तम साधन मानते थे, उनका मानना था शिक्षा ही किसी भी राष्ट्र के निमार्ण की चाबी है। किसी भी राष्ट्र का निमार्ण उसके नागरिकों पर निर्भर करता है और वे सभी नागरिक मिलकर समाज का निमार्ण करते है। पंडित जी का मानना था सभ्य समाज का निमार्ण परिस्कृत शिक्षा प्रणाली द्वारा ही किया जा सकता है सामाजिक शिक्षा, अन्त्योदय, एकात्म मानव आदि प्रत्यायों का सृजन उनके शैक्षिक व्यक्तित्व की झलक मानस पटल पर गहरे से छाप छोडती है। पंडित जी ओपचारिक शिक्षा (शालेय शिक्षा) के साथ–साथ अनौपचारिक (समाज के द्वारा) शिक्षा को भी उतना ही महत्वपूर्ण मानते थे क्योकि सामाजिक शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति में संस्कारों व मूल्यों का बीजारोपण आसानी से किया जा सकता है। पंडित जी मजहबी आधार पर शिक्षा के स्वरूप के निमार्ण के विरोधी थे विशेषतः ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाई जाने वाली संस्थाओ को देश के लिए उन्होनें खतरनाक बताया। पंडित जी शिक्षा को देश की उन्नति का सर्वोत्तम उपकरण मानते थे, इसलिए वह शिक्षा को औपचारिक व अनौपचारिक दोनो माध्यमों से देने के पक्षधर थे। सामाजिक व व्यक्तिगत शिक्षा संस्कृति व मूल्यगत नैतिक शिक्षा, नवनिमार्ण की शिक्षा, भौतिकवाद का अध्यात्मिकता से जुडाव की शिक्षा से युक्त समाज के निमार्ण के स्वजदृष्टा से थे पंडित जी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी विज्ञान और संस्कृति क समन्वित स्वरूप को ही समाज के पुननिमर्माण का आवश्यक तत्व मानते है और आगाह करते है ष्हम सम्पूर्ण मानव के ज्ञान और उपलब्धियों का संकलित विचार करें। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के व्यक्तित्व व कृतित्व से समझा जा सकता है कि वह भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यक्तिगत व सामाजिक शिक्षा, भौतिक व आध्यात्मिक शिक्षा, भौतिक व वैज्ञनिक शिक्षा एंव आडम्बर विहीन शिक्षा के समन्वित दृष्टिकोण के पोषक थे।

संकेत शब्द :– जीरो क्लब, अत्योदय, एकात्म मानववाद, औपचारिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, आडम्बर विहीन शिक्षा,आध्यामिक शिक्षा, वैज्ञानिक शिक्षा।

प्रस्तावना :–

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के द्वारा रचित विभिन्न ग्रन्थों एंव उनके लेखों का अध्ययन करने के उपरान्त हम कह सकते है कि वह बहुत बडे शिक्षा मनीषी थे। पंडित जी के शैक्षिक चिन्तन को समझने के लिए उनकी पुस्तक "एकात्म मानववाद" व उनके द्वारा लिखे गये विभिन्न पत्रिकाओं में छपे उनके उद्‌बोधों के सार रूप ही काफी है। पंडित जी ने सभी वर्गों की शिक्षा को आवश्यक माना है, वह अन्तिम पायादान के

व्यक्ति को भी शिक्षित करने की बात कहते थे। पंडित जी का मानना था कि बिना समाज की उन्नति हुये व्यक्ति की उन्नति संभव नहीं है। सामाजिक जीवन में कार्य करते हुये उनको अनुभव हो गया था कि राष्ट्र की निर्धनता और अशिक्षा को दूर किये बिना असली उन्नति नहीं हो सकती है। किसी भी राष्ट्र का विकास उसके शिक्षित व सभ्य नागरिकों पर निर्भर है जो शिक्षा ग्रामोन्मुखी, पिछडें व कमजोर वर्ग के उत्थान में सहायक चारित्रिक व नैतिकता से जुडी हुई व उपयोगी हो। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने शिक्षा को ही समाज की "जननी" माना है उनका विवेचन है– "बच्चे को शिक्षा देना समाज के अपने हित में है जन्म से मानव पशुवत पैदा होता है, शिक्षा और संस्कार से वह समाज का अभिन्न घटक बनता है।"

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारत वर्ष की शिक्षा व्यवस्था पर चिन्ता व्यक्त करते हुये चेतावनी भरे शब्दों में कहा है कि "स्वतन्त्रता के बाद हमें अपनी स्वतन्त्र शिक्षा नीति का कार्यान्वयन करना चाहिए था जो नहीं हो सका, क्योंकि इस देश के भाग्य विधाता वे लोग बने जिनकी शिक्षा–दीक्षा कैम्ब्रिज व आक्सफोर्ड में हुई थी जो अपनी मातृभाषा में सोचने, बोलने और लिखने के बजाय अंग्रेजियत पर ज्यादा गर्व करते थे। उन्होंने भारत को इंग्लैण्ड और अमेरिका जैसे पश्चिमों देशों का नकलची बनाने की चेष्टा की और भारत की आध्यात्मिक संस्कृति की उपेक्षा उन्होनें पश्चिम की भौतिकवादी संस्कृति को तरजीह दी।"

आज भारत के शिक्षित वर्ग के जीवन मूल्यों पर पश्चिम का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। जब तक अंग्रेज थे तब तो हम स्वदेशी की भावना से अनुप्राणित होकर अंग्रेजियत को दूर रखने में अपना गौरव समझते थे किन्तु अब जब अंग्रेज चले गये तो उनके द्वारा अंग्रेजियत का खड़ा ढाँचा हमने अपने यहां बिना परिवर्तन के यथावत स्वीकार कर लिया और अंग्रेजियत पश्चिम की प्रगति का द्योतक एवं माध्यम बनकर अनुकरणीय बन गयी है। भारत की भावी दिशा का निर्णय करने से पूर्व पश्चिम के वैचारिक अधिष्ठान को जान लेना ठीक रहेगा। तथ्य परक विश्लेषणोंपरान्त हम पायेगें कि विश्व इस स्थिति में नहीं है कि हमारा कुछ दिशा–निर्देशन कर सके वह तो स्वंय चौराहे पर है उनके पीछे चलना "अन्धेन नीयमानः यथा अन्धाः" वाली कहावत चरितार्थ हो जायेगी।

किसी भी राष्ट्र के समुचित विकास के लिए उसको अपनी संस्कृति एवं आदर्शों की शिक्षा को अपनी शैक्षिक संरचना में उचित स्थान देना होता है। जिससे उसके विकास की नींव मजबूती से खडी रह सके, इस क्रम में इजरायल हमारे लिए एक ज्वलन्त उदाहरण है स्वतन्त्र होते ही इजरायल ने अपनी हिब्रू भाषा को अपनी राष्ट्रभाषा बनाया और मुस्लिम अरब देशों से घिरा हुआ सफलतापूर्वक सीना तान कर खड़ा है। कुल मिलाकर कह सकते है कि कोई भी राष्ट्र बिना अपनी मातृभाषा को स्थान दिये प्रगति के पथ पर आगे नहीं बढ़ सकता है।

पंडित जी का मानना था कि शिक्षा का सर्वोत्तम माध्यम किसी भी राष्ट्र की अपनी मातृभाषा ही है जो उसे प्रगति के मार्ग पर ले जाने में सक्षम बनाती है कुल मिलाकर हमारी शिक्षा का जो स्वरूप है वह नितान्त औपचारिक है, जो कृत्रिम विधियों से आगे बढ़ती है और पुस्तकीय ज्ञान रटाकर शिक्षार्थी को पंडित बना देना चाहती है। जबकि शिक्षा का स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिए कि उसके द्वारा बालक का शारीरिक विकास, मानसिक विकास, बौद्धिक व नैतिक विकास तथा आध्यात्मिक विकास समन्वित रूप से हो जिससे कि वह अपने पैरों पर खड़ा होकर समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करने में सक्षम हो सके। "हम दीन, दुखी निवलों विकलो के सेवक वन सन्ताप हरें।" राष्ट्राय स्वाहा इंद नमय् का भाव प्रस्फुटित हो सके।

पंडित जी का विचार है कि जिस प्रकार मनुष्य की भौतिक आवश्यकताएं होती है उसी प्रकार उसकी आध्यात्मिक आवश्यकताएँ भी है जिनको शिक्षा या संस्कार कह सकते है उन्होने कहा है कि "मानव

के नाते भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति किसी भी अर्थव्यवस्था का न्यूनतम स्तर है रोटी, कपडा और मकान, मोटे रूप में इन अवश्यकताओं की अभिव्यन्जना करते है।" इसी प्रकार व्यक्ति को समाज के प्रति कर्तव्यों का निर्वाह करने में सक्षम बनाना भी समाज का आधारभूत दायित्व है।

शिक्षा के महत्व को कोई भी समाज व राष्ट्र नकार नहीं सकता है। किसी भी समाज का जन्म शिक्षा के द्वारा व शिक्षा का विकास समाज के द्वारा ही संभव है। पंडित जी ने "राष्ट्र जीवन की दिशा में लोकमत परिष्कार में उल्लेख किया है– "शिक्षा और संस्कार से ही समाज के जीवन मूल्य बनते और सुदृढ़ होते है" पंडित जी ने शिक्षा को समाज में प्रथम प्राथमिकता प्रदान की है उनका कहना है कि–"हमारे शास्त्रकारों के अनुसार यह ऋषि ऋण है जिसे चुकाना प्रत्येक का कर्तव्य है। जब हम भावी सन्तति की शिक्षा व्यवस्था करते है तो हमारी उनके प्रति उपकार की भावना नहीं रहती है अपितु हमें जो कुछ धरोहर अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई उसे आगे की पीढी को सौंपकर उनके ऋण से उऋण होने की मनीषा रहती है। पंडित दीनदयाल जी के अनुसार मनुष्य को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे वह अपने समाज का सर्वस्व समर्पण करने के लिए तैयार रह सके। अतः भाडे की शिक्षा व्यवस्था अपनी परंपरा में नहीं बैठती ढेर सारे उदर पोषण के विषयों की भीड से उत्तम राष्ट्रीय मानव का निर्माण नहीं होता हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसमे दृढ़ चरित्र शरीर व मन की बलोपासना विशुद्ध ज्ञान और धर्म के शाश्वत तत्वों को विवित करने जैसी पवित्र बातों के संस्कार बाल्यकाल से दृढ करते रहने की योजना हो। जो प्रवृति और व्यवस्था जो सामाजिक नियम और शिक्षा पद्धति हमें कर्म विहीन, निदालु आलसी और बेईमान बनाए उसे हेय समझकर बदलने के लिए कटिबद्ध हो जाएँ तथा राष्ट्र को परम वैभव तक ले चलने में समर्थ हो सके।"परम् वैभवम नतू मेतत् स्वराष्ट्र समर्था भवत्वाशिष ते भृशम।"पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी युगानुकूल शिक्षा व्यावस्था व विज्ञान की शिक्षा के भी उतने ही समर्थक थे जितने कि आध्यात्मिक एंव नैतिक शिक्षा के। पंडित जी पश्चिमी व्यवस्था के अन्धानुरण का विरोध करते थे लेकिन वे सभी मानवीय सदप्रयत्नों का आदर करते थे। उनका कहना था कि विश्व का ज्ञान हमारी थाती है मानव जाति का अम्युदय हमारी सम्पत्ति है। विज्ञान किसी देश की बपौती नहीं है। वह हमारे भी अभ्युदय का साधन बनेगा। हमें अपने घर की सभी खिड़किया खोलकर रखनी होगी। चारों ओर से आने वाली हवाओं का स्वागत करना होगा। पंडित जी के चिंतन को कबीर दास जी के इस दोहे से भी समझा जा सकता है– "सार–सार को गहि रहै, थोथा देय उडाय।" विश्व जगत के लिए लाभकारी व वैज्ञानिक शिक्षा को हमें अपनी शिक्षा प्रणाली में स्थान देना चाहिए और अपनी प्रगति करने में समुचित उपयोग करना चाहिए। विदेशी को स्वदेशानुकूल और स्वदेशी को युगानुकुल बनाकर चलना होगा। जो विचार और व्यवस्था कालातीत हो गयी है सड़ गयी है उसको काटकर फेंक देना होगा ताकि संक्रमण से बचाव हो सके।

पंडित जी के अनुसार भारतीय शिक्षा प्रणाली की जड़ें भारतीय संस्कृति व अपनी मातृभाषा से जुडी हुई हो जो यहाँ की भौगौलिक परिस्थितियों एवं तात्कालिक परिस्थितियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम हों व ऐसे नागरिकों का निर्माण कर सकें जो मानवीय व आध्यात्मिक संस्कारों से परिपूर्ण हो, जो विश्व के विकास में भागीदार बनें व पूरे विश्व का मार्गदर्शन करने में सक्षम हो।

पंडित जी के सिद्धान्तानुसार शिक्षा ऐसी हो जो "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना जाग्रत करें और साथ–साथ परमसत्ता से (परमात्मा) से एकाकार करने में सहयोग प्रदान करें। भारत सरकार द्वारा प्रतिपादित नई शिक्षा नीति 2020 पूर्णतया पंडित जी के शैक्षिक चिंतन पर आधारित है। 7 सितम्बर 2020 को नई शिक्षा नीति की भूमिका रखते हुये भारत के शिक्षा मन्त्री डॉ० रमेश पोखरियाल "निशंक" ने कहा कि हम ऐसी शिक्षा नीति देश को समर्पित कर रहे है, जिसमें "नेशन फर्स्ट और करेक्टर मस्ट" पर ध्यान केन्द्रित अर्थात्

मूल्योंन्मुख शिक्षा व्यवस्था। हमें आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाने के लिए ज्ञान और कौशल को बढ़ाना होगा, सीखकर प्रयोग करते हुए प्रदर्शन करना होगा। बच्चों को दबाब, प्रभाव और अभाव से मुक्त शिक्षा देनी होगी। छोटी उम्र से ही अर्थात् कक्षा 6 से ही अर्थात् 14 वर्ष की उम्र से ही बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा अर्थात कौशलपूर्ण शिक्षा से युक्त तथा ग्लोबल मार्केट में भागीदारी के योग्य बनाना होगा। उन्होंने जोर देते हुये कहा है कि "सा विद्या या विमुक्तये" के आधार पर भारत को स्वतः मुक्त दायिनी शिक्षा की आवश्यकता है, उन्होंने कहा हमारी शिक्षा हमारी प्राचीन समृद्धिशाली परम्परा से जुडी हुई हो, आशावादी भी हो और बहुभाषावादी भी हो। नागरिक गुणों से परिपूर्ण होने के साथ–साथ विश्व–मानव होने का बोध कराये। विश्व प्रतिस्पर्धा के लिये लचीली हो और स्थायित्व वाली हो तकनीकी के व्यापक उपयोग से जय अनुसंधान का नारा साकार हो सके।

"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशात् अग्र जन्मनः
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्याः सर्वमानवाः"

हमारा राष्ट्र कोई ऐसा भूप्रदेश तो नहीं जो आज सहसा समुद्र से आकर आ टिका हो, सहस्रो वर्षों का हमारा राष्ट्र जीवन इस भूमि पर रहा है। इतने लम्बे काल खण्ड में हमारी प्रवृति और परम्परा अक्षुण रही है। हमें इस पर ठीक विचार कर अपनी प्रतिभा के भरोसे आधुनिक प्रगति की दिशा तय करनी होगी। हमारी जीवन पद्धति हमारा मार्गदर्शन करने के लिए विद्यमान है। यह सही है कि हजारों वर्षों के इतिहास को जैसे का वैसा लेकर नहीं चल सकते तथापि अपनी जीवन पद्धति के मूल तत्वों को भुलाकर भी हम नहीं चल सकते उन्हें युगानुकूल बनाकर ग्रहण करना होगा। नूतन और पुरातन गुण गरिमा का मणिकांचन संयोग उपस्थित करते चलना होगा। आधुनिक कार्ययोजना और पुरातन संदर्भ शिक्षा लेकर राष्ट्रीय नव निर्माण के चरण बढ़ाने होंगे। इस दृष्टि से भारतीय मनीषियों द्वारा दिया गया चिन्तन दर्शन अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं युग तथा राष्ट्र के अनुकूल प्रतीत होता है, जिन्होंने मानव जीवन का गहराई से अध्ययन करके शाश्वत सुख का मार्ग दिखाने वाला सर्वागपूर्ण दर्शन "एकात्म मानव वाद" हमको दिया है।

"एकात्म मानव वाद" के अनुसार मनुष्य शरीर मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्चय है हमारी संस्कृति में मनुष्य का टुकडे–टुकडे में विचार न करके उसका सम्पूर्णता में विचार किया गया है इसलिए शिक्षा ऐसी चाहिए जो शरीर के लिए 'खानपान' मन के लिए 'स्वाभिमान' बुद्धि के लिए 'ज्ञान' और आत्मा के लिए 'भगवान' उपलब्ध करा सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का गहराई से अध्ययन करने पर हम पाते है कि विश्व नागरिक की कल्पना कौशल युक्त शिक्षा व सभी वर्गों की पहुँच में शिक्षा व समाजोपयोगी शिक्षा व मूल्य शिक्षा की मूल संकल्पना पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक चिंतन का सार है जिसमें "नेशन फर्स्ट और करेक्टर मस्ट" की भावना निहित है।

सन्दर्भ सूची–

अवस्थी, बी. (n.d.). *राष्ट्रवाद.* लोकहित प्रकाशन, लखनऊ.

शर्मा, एम. (n.d.). *पं० दीनदयाल उपाध्याय कर्तव्य एंव विचार.* वसुधा पब्लिकेशन्स, प्रा०लि०8 बाराखम्मा मार्ग, नई दिल्ली.

भिषीकर, सी. पी. (n.d.). *पं० दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन.* खण्ड–5 राष्ट्र की अवधारण अनुवादक मोटेश्वर तपस्वी, सुरुचित प्रकाशन झण्डेवाला, नई दिल्ली.

गोयनका, के. के. (n.d.). *पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन.* दीनदयाल शोध संस्थान,रानी झाँसी मार्ग नई दिल्ली

उपाध्याय, डी. (n.d.). *एकात्म मानव दर्शन.* सुरूचि प्रकाशन केशव कुन्ज, नई दिल्ली

शर्मा, एस. आर. (n.d.). *नैतिक शिक्षा.* युग निर्माण योजना, मथुरा

ठेंगडी, दी. (n.d.). *एकात्म मानववाद एक अध्ययन.* लोकहित प्रकाशन राजेन्द्र नगर, लखनऊ